जुलाई - अगस्त 2012 वर्ष-3, अंक-13

जीवन का मार्ग

"प्रभु में सदा आनन्दित रहो..."

(फिलिप्पियों 4:4)।

विषय वस्तु

संपादकीय ---------- 1
सरल सुन्दर ---------- 2
परमेश्वर के वचन का अध्ययन क्यों आवश्यक है? (भाग 2) 7
तीन सलाह ---------- 10
बाइबल में की माताएँ - 4 ---------- 13
बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक - 13 ---------- 15
शब्द पहेली ---------- 16
मूसाः परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाता है ---------- 17

बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक - 11

का उत्तर

सभी प्रश्न फिलिप्पियों की पुस्तक से लिये गये थे।

1. उत्तम से उत्तम बात और सच्चे बने रहने (1:10)
2. सुसमाचार की बढ़ती हुई (1:12)
3. एक ही आत्मा में स्थिर होना और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिए परिश्रम करते रहो (1:27)
4. अंगीकार करना है कि यीशु मसीह ही प्रभु है (2:11)
5. सब काम बिना कुड़कुड़ाए और विवाद के किया करने से (2:14,15)
6. शुद्ध मनवाला स्वभाव (2:20)
7. भूलवश यह प्रश्न गलत छप गया था (3:3)
8. मसीह के कारण (3:7)
9. स्वर्ग पर है और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं (3:20)
10. सदा आनन्दित रहना है (4:4)

प्रतियोगिता क्रमांक-11 के विजेतागण

1. मोती सिंह, 2. अनिल रात्रे। विजेताओं को एक पुस्तक उपहारस्वरूप भेजी गई है।

मसीही विश्वासियों की आत्मिक उन्नति एवं वचन में बढ़ती के उद्देश्य से प्रकाशित एवं प्रसारित अर्न्तसामुदायिक द्विमासिक पत्रिका

पत्र व्यवहार के लिये पता

जीवन का मार्ग

पोस्ट बॉक्स् न. - 27,

बिलासपुर - 495 001, छ.ग.

संपादकीय

क्या आने वाले वर्ष शांति और समृद्धि के होंगे? क्या आने वाली पीढ़ी हमें धन्य कहेंगी कि हमने उन्हे एक सुंदर संसार दिया? रहने के लिये...जीने के लिये...? भ्रष्टाचार का आदोलन कमजोर हो चुका है...शायद लोग अच्छी तरह जानते हैं कि आजाद देश के आजाद नागरिक होने के नाते उन्हे पाँच वर्ष में एक बार ही बोलने की आजादी है, वह भी मुँह से नहीं, अपितु वोट से...।

पिता जल्दी जल्दी फल तोडकर अपनी झोली में भरता जा रहा था, सहसा बालक चिल्ला उठा। पिताजी, कोई देख रहा है। बालक की बात से घबराया पिताजी सरपट नीचे उतरने लगे।

कौन है? कहां है? कौन देख रहा है? घबराहट से पिता इधर उधर देखने लगे। पिता की हडबडाहट देख पुत्र ने कहा, पिताजी ईश्वर देख रहा है!!

यह छोटी सी कहानी हमारे मसीही जीवन में कितना वास्तविक है। मसीह हमारे साथ रहता है। वह हमारे प्रत्येक कार्य को देखता और जानता है। हम उससे कुछ भी छिपा नहीं सकते हैं। हमें अपना जीवन परमेश्वर के लिये ग्रहण योग्य बनाना है। यही सच्चा और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान है। आईये स्वयं को उसके सामने भावता हुआ बलिदान करके चढायें।

प्रभु की सेवा में

संपादक

सरल सुन्दर

साजु जे. मैथ्यू

सुनील एक जाना पहचाना चित्रकार है। प्रसिद्ध होने पर विश्लेषक उसके चित्रों का अर्थ निकालने लगे। बाद में यह हाल था कि सुनील ने क्या चित्र बनाया है, यह समझने के लिये विश्लेषक से पूछना अनिवार्य हो गया। विश्लेषकों ने सुनील के चित्रों को 'अद्‌भुत' करार दिया। उसके चित्रों की प्रदर्शनी में भारी भीड़ जुटने लगी। उसके चित्रों के ऊँचे दाम मिलने लगे। सुनील के चित्र धनाढ्य लोगों के स्वागत-कक्ष की शोभा बनने लगे।

एक बार सुनील के चित्रों की प्रदर्शनी चल रही थी। एक चित्र विशेष के बारे में विश्लेषकों ने समाचार पत्रों में इस प्रकार लिखा।

"यह चित्र अद्‌भुत है। चित्र में हम एक भरा हुआ पात्र देखते हैं, उसमें से उमड़ता हुआ तेल ....। और फिर आकाश की ओर बढ़ते दो सींग.....उसके बगल में दो छोटे सींग भी!! पात्र जन्म की सफलता है। इत्र उसे रोकने वाली माया का बेताल है। वे सींग क्या हैं? वह माया को बीच में से चीरते हुए बाहर की ओर झांकती उम्मीद के सिवा कुछ नहीं है। वे छोटे सींग....वे तो जारी रहने वाली आशा का प्रतीक है....।"

सब कुछ पढ़ने के बाद सुनील ही संदेह में पड़ गया। क्या विश्लेषक मेरे ही चित्र के बारे में यह सब कह रहा है? वह चित्र कौन सा है? सुनील उस विशाल कक्ष में पहुँच गया, जहाँ उसके चित्रों की प्रदर्शनी चल रही थी.....विश्लेषक द्वारा वर्णित चित्र को देखने के लिये! वह अपनी हँसी नहीं रोक पाया। किसी ने उस चित्र को उलटा टांग दिया था। वास्तव में वह चित्र बहुत सरल था-एक मेज पर एक युवती उदास बैठी है। चित्र को उलटा रखने पर युवती का सिर भरा हुआ पात्र बन गया। मेज पर रखा पात्र माया का बेताल बन गया। मेज की टांगे माया की उदासी को चीर कर आकाश की ओर जानेवाली आशा का सूचक बन गई।

गलती किससे हुई? प्रदर्शनी स्थल पर चित्रों को टांगने वाले ने चित्र को उलटा टांग दिया था। यह पहली गलती थी। लेकिन सबसे बड़ी गलती यह नहीं थी। उलटे चित्र की व्याख्या करनेवाले विश्लेषक की बुद्धि अपार थी। यदि विश्लेषकों ने व्याख्या करके इस चित्र के अर्थ का अनर्थ न किया होता तो एक अनपढ़ व्यक्ति भी कुछ देर देखने के पश्चात् यह समझ जाता कि चित्र उलटा टंगा है। किन्तु विश्लेषक की व्याख्या ने आम जनता को सुनील के चित्र की वास्तविकता में प्रवेश करने से रोक रखा था।

वास्तव में बाइबल के विषय में भी यही बात हुई है। विश्लेषक - व्याख्या करनेवाले - ने वचन को जनसाधारण से अलग कर दिया। उसने उसे वह अर्थ दिया जो एक आम आदमी सपने में भी नहीं सोच सकता है। उपरोक्त घटना में, सुनील ने भी अपने स्वयं के चित्र के तथाकथित अर्थ को तब समझा जब विश्लेषक ने बताया। ऐसे प्रचारकों से हम अनजान नहीं है जो वेदी पर खड़े होकर वचन के ऐसे अर्थ का बखान करते हैं जिसे परमेश्वर ने भी कभी सोचा नहीं होगा। कई बार बाइबल को उलटा पकड़ कर पढ़ने के बाद उसे गूढ़ अर्थ प्रदान करते हैं। ऐसे व्याख्यान अनेक लोगों को ज्ञानी बना देते हैं! पर बेचारा साधारण व्यक्ति मारा जाता है!

अन्यथा जरा सोचिए। इब्रानी बाइबल के प्रत्येक सातवें शब्द को अंक देकर उनका योग कर अर्थ देने वाला बाइबल विद्वान किसके लिये वचन की व्याख्या करता है? ऐसा कर हम किस का भला करने का प्रयास कर रहें हैं। क्या यह अक्सर चित्र को उलटा पकड़ उसकी व्याख्या करने के समान नहीं होता है?

परमेश्वर ने अपने वचन को बहुत सरल रुप में मनुष्यों को दिया है। अक्सर हम उसे उसी रुप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते हैं। विश्लेषक उसे गूढ़ बनाकर मुस्कुराता है। विश्लेषक का तर्क था कि यदि सुनील ने चित्र बनाया है तो उसमें गूढ़ अर्थ छुपा हुआ है। मंच पर से प्रचार करने वाले ज्ञानी प्रचारकों का मत होता कि वचन को सरल नहीं किया जा सकता है। इसलिये बाइबल भाग कितना भी छोटा क्यों न हो, वे उसमें अंकों और चित्रों का हवाला देकर उसमें ख्रिश्चस्त विरोधी, भेड़ों के झुण्ड और कम्प्यूटर प्रचालक आदि को देखते हैं। इसलिये साधारण विश्वासी किसी साधारण भाग की व्याख्या करने से भी भयभीत रहता है। वह विश्वास नहीं कर पाता है कि बाइबल को इतना सरल भी किया जा सकता है कि उसे समझा जा सके। कहीं कोई गूढ़ अर्थ वचन में छुपा हुआ न हो!

हिमाचल वासी प्रोफसर सुन्दर सिंह से (उनके दोस्त उन्हे सुकरात कहकर पुकारते थे- ज्ञानी) उनके मित्र ने पूछा "सुन्दर क्या आपने गीता पढ़ा है?"

"हाँ, अवश्य," सुन्दर सिंह ने उत्तर दिया।

"तो फिर आपको गीता समझ में भी आ गई होगी?"

"हाँ," सुन्दर ने कहा।

"यार, क्या आपको गीता पूरी तरह समझ में आ गई?" मित्र ने पुनः उनसे पूछा।

"ऐसा नहीं लगता कि पूरा समझ में आ गया।" सुन्दर ने नम्रता पूर्वक कहा।

"आएगा भी नहीं।" मित्र को सन्तोष हुआ।

न समझ में आना को वह गीता की विशेषता के रुप में देखते हैं। उसे समझने के लिये विद्वान ऋषि, मुनि ही चाहिए।

न समझ में आना यदि गीता की विशेषता है तो समझ में आना बाइबल की विशेषता

है। बाइबल लिखा ही इसलिये गया है कि लोग - वह भी साधारण लोग - उसे समझें।

ऐसा नहीं है कि साधारण व्यक्ति के न समझने लायक कुछ भी बाइबल में नहीं है। फिर भी ऊपरी तौर पर देखें तो बाइबल लिखा ही इस प्रकार गया है कि साधारण लोग उसे समझ सकें। इस प्रकार नहीं कि साधारण लोग उससे दूर भागें।

हम जानते हैं, कि बाइबल के लेखकों में अधिकांशत: साधारण लोग थे। शमूएल जो ग्रामीण भविष्यद्वक्ता था, दाऊद जो चरवाहा था, अंजीर की खेती करनेवाला आमोस, पुरोहिताई पृष्ठभूमि वाला यिर्मयाह, यहेजकेल जो अप्रवासी था, महसूल लेनेवाला मत्ती, वैद्य लूका, पतरस जो मछुवारा था, पौलुस जिसने जिद किया कि वह शब्दों का खेल नहीं खेलेगा।

परमेश्वर ने क्यों बहुत ही साधारण लोगों को अपने महान पुस्तक के लेखन के लिये चुना?

कुछ लोग कह सकते हैं कि निर्बल पात्रों में अपनी सामर्थ्य प्रगट कर महिमा लेने के लिये उसने ऐसा किया। किन्तु इससे भी तार्किक एक और विचार है। परमेश्वर जानता था कि उसके सन्देश के पाठक साधारण लोग होंगे। जब वे उसे पढ़ेंगे तो शब्दों और शैली से भी लोगों को वचन अनजान नहीं लगना चाहिए। मान लीजिए परमेश्वर महान कवि होमर या दार्शनिक सुकरात जैसे लोगों को अपना वचन लिखने के लिये चुनता.....हम जैसे साधारण लोग निश्चय ही बाइबल पढ़कर दुविधा में पड़ जाते। प्लेटो या अरस्तुस के लेखों वाले किसी पुस्तक को पढ़कर देखिए। पहला पन्ना समाप्त करने में ही हमारा पसीना निकल जाएगा। यदि परमेश्वर उनके द्वारा अपना सन्देश दिया होता तो वह अधिकांश लोगों से दूर ही रहता। किन्तु परमेश्वर संसार के लिये अपने सन्देश को साधारण लेखकों के बुद्धि क्षेत्र में डालकर उसे साधारण लोगों की पहुंच के भीतर ले आया।

ऐसे लोग भी हैं जो सोचते हैं कि बाइबल को लोगों की पहुंच के बाहर रखना विद्धता है। किन्तु वे वचन के साथ न्याय न करने वाले होते हैं क्योंकि परमेश्वर सदा वचन को सरल करना चाहता है। परमेश्वर का मन (लोगोस) जो आदि से ही वचन था उसे मनुष्यों की पहुंच के भीतर लाने के लिये ही वचन ने शरीर धारण कर हमारे बीच रहा। (यूहन्ना 1:14) और हमारे बीच रहा। उसे किसी भी रीति से गूढ़ नहीं बनाना चाहिए।

एक बार सेमिनरी (बाईबल संबंधी) शिक्षा प्राप्त एक विद्धान युवक एक ग्रामीण कलीसिया में पादरी नियुक्त हुआ। अपने प्रवचनों में वह सिर के ऊपर से जानेवाले उपदेशों और मुँह में न समाने वाले कठिन धर्मवैज्ञानिक शब्दों का प्रयोग करता। अन्तत: हारकर गाँव के मुखिया ने एक दिन उससे कहा, "पास्टर, आप जो कुछ कह रहे हैं वे सचमुच ज्ञान की बातें हैं, लेकिन यह सब हमारे सिर के ऊपर से निकल जाती हैं।"

"सिर के ऊपर से निकल जाती हैं तो मैं क्या कर सकता हूँ? आपको अपना सिर थोड़ा ऊँचा करना होगा, तभी वह सिर में घुसेगा।" पास्टर ने तर्क दिया।

"पास्टर, आपने बिल्कुल सही कहा। हम ऐसा करने का प्रयास करेंगे। यदि समझ में आ जाए तो हमारा ही तो भला होगा! किन्तु आपको एक बात स्मरण करना चाहिए। परमेश्वर ने पतरस जैसे महान चेले को भी मेम्नों को चराने के लिये नियुक्त किया था। जिराफों को नहीं।"

वचन के व्याख्यातागण-प्रवचनकर्ता और प्रचार करनेवाले और लेखक-यदि इस बात पर ध्यान दें तो बहुत अच्छा होगा। वचन को साधारण की लोगों की पहुंच के भीतर लाना ही आज की आवश्यकता है।

प्राचीनों से भी एक बात कहे बिना मैं नहीं रह सकता। क्या वचन ग्रहण करने के लिये हरेक बार व्याख्याताओं की खोज में जाने की आवश्यकता है? सुनील के अधिकांश चित्र साधारण लोगों की समझ में आनेवाले थे। विश्लेषक की कुशाग्र बुद्धि के कारण ही वह साधारण लोगों की पहुंच के बाहर रह गया। यह सोचना अधिक सही होगा कि अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिये यह उनकी एक चाल थी।

कभी कभी वचन के व्याख्या की आवश्यकता होती है।

"जब फिलिप्पुस दोड़कर वहाँ पहुंचा तो खोजा को यशायाह की पुस्तक को पढ़ते हुए सुना। उसने (फिलिप्पुस ने) पूछा कि जो तू पढ़ता है क्या उसे समझता भी है? तो खोजा ने उत्तर दिया, कि जब तक कोई मुझे न समझाए तब तक मैं कैसे समझूँ?" (प्रेरितों 8:30,31)

यहाँ पर यह स्मरण करना आवश्यक है कि खोजा एक गैर यहूदी पृष्ठभूमि का व्यक्ति है और जो भाग वह पढ़ रहा था, वह यहूदियों को मसीह के आगमन की सूचना देने वाला विशेष भाग था। वरना यह आवश्यक नहीं था कि खोजा को किसी व्याख्याता की आवश्यकता पड़े।

निश्चय ही व्याख्या का अपना महत्व है, किन्तु बाइबल के अधिकांश भाग बिना किसी व्याख्याता की सहायता के समझा जा सकता है। बस इतना कि इसके लिये जान बूझकर किया गया प्रशिक्षण और परिश्रम आवश्यक है।

हमेशा व्याख्या करने वाले की सहायता लेना खतरनाक भी हो सकता है। वचन की सरलता को समझकर उसे स्वयं ग्रहण करने का प्रयास करना आवश्यक है। 'वचन' को हमें अपना बनाना है। स्वयं अध्ययन कर उसे समझना है। एक कहावत है, कि "यदि आप मुझे आज भोजन खिला देंगे, तो मैं आज जी सकता हूँ। किन्तु यदि आप मुझे एक नौकरी दिला देंगे तो मैं जीवन भर खा सकता हूँ।" यदि हम रोटी कमाना नहीं जानते हैं तो हमें रोज किसी पर आश्रित होना होगा। यदि हम रोटी कमाना जानते हैं तो जिस पर हम आश्रित होते हैं, उसका एकाधिकार समाप्त हो जाता है। रोटी देने वाले की रोटी का विश्लेषण करने की हमारी क्षमता (जिम्मेवारी) भी बढ़ती जाती है।

वचन का हमारा अपना बनना धर्म के ठेकेदारों को पसंद नहीं आता है। किन्तु यह अनिवार्य है। पुराने समय में जब कैथलिक कलीसियाएँ साधारण लोगों को वचन से दूर

रखती थीं, तब एक बार एक पुरोहित ने किसी मसीही विश्वासी को बाइबल पढ़ते हुए देखा। "आपको धर्मशास्त्र नहीं पढ़ना चाहिए। उसे पढ़कर व्याख्या करने के लिये हम लोग यहाँ हैं।" पादरी ने कहा।

"पादरी साहब, मैं डेली नीड्स की दुकान से दूध खरीदता हूँ। किन्तु हर समय मिलावट वाला दूध मिलता है। इसलिये मैंने बड़ी मुश्किल होने के बाद भी एक गाय खरीद लिया। जबकि मैं गाय दुहना भी अच्छी तरह नहीं जानता था।" उस विश्वासी ने कहा।

आगे की कहानी यह है कि पास्टर चुपचाप वहाँ से खिसक लिए।

वचन को अपना बनाने की प्रक्रिया में सबसे पहले हमें यह जानना है कि वचन हमारे लिये ही दिया गया है। जब उसे पढ़ना प्रारंभ करते हैं तो हम जानने लगते हैं कि वह कितना सरल है। क्रमशः उसमें हमारी रुचि बढ़ती है (धर्मशास्त्र की सरलता में उतरने के लिये सीढ़ी के रूप में उपयोग में आने के लिये ही इस पुस्तक में सरल भाषा का प्रयोग किया गया है)।

यहोवा की व्यवस्था खरी है,

वह प्राण को बहाल कर देती है;

यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं,

साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं;

यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं,

हृदय को आनन्दित कर देते हैं;

यहोवा की आज्ञा निर्मल है,

वह आँखों में ज्योति ले आती है;

यहोवा का भय पवित्र है,

वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है;

यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं।

वे तो सोने से भी और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं;

वे मधु से और टपकने वाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं।

और उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है;

उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है। (भजन 19:7,8,9,10,11)

वचन भजनकार का अपना है। यह नाचीज भी उससे पोषण प्राप्त करता है।

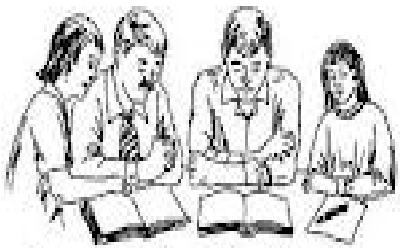

परमेश्वर के वचन का अध्ययन क्यों आवश्यक है?

(भाग-2)

सुनील एम ए., बिलासपुर

5. परमेश्वर के वचन का अध्ययन सच्ची कलीसिया की प्रकृति के लिए अनिवार्य है।

मानवता को पुनः सिखाने और परमेश्वर के राज्य का भण्डारी होने के लिए परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को भेजा। साढ़े तीन वर्ष के शिक्षा के पश्चात ही यीशु ने कलीसिया की स्थापना की बात प्रगट की। वे जिन्होने शिक्षा स्वीकार की और पवित्र आत्मा प्राप्त किया वे कलीसिया में स्वीकार किए गए। कलीसिया का वास्तविक अर्थ 'विशेष अभिप्राय के लिए बुलाए गए लोगों का समूह' है। कलीसिया एक इमारत नहीं है परन्तु ईश्वरीय उद्देश्य के लिए बुलाए गए लोगों का समूह है। इस प्रकार सच्ची कलीसिया में महत्वपूर्ण तत्व परमेश्वर का वचन सिखाना, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और आत्मा के वरदान इत्यादि हैं। संस्कारों पर आधारित कलीसियाओं की अवधारणा ही सच्ची मसीहियत के विरुद्ध है। प्रारंभ में संपूर्ण कलीसिया परमेश्वर का वचन सीखने और शिक्षा का प्रसार करने में सम्मिलित था। अधिक महत्व शिक्षा को दिया जाता था जैसा प्रेरित लूका कहते हैं, ''तब उन बाहरों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने पिलाने की सेवा में रहें।'' (प्रेरितों 6:2)। प्रथम सदियों में छापाखाना, कम्प्यूटर, तीव्र संचार या सार्वजनिक संबोधन प्रणालियाँ उपलब्ध नहीं थी परन्तु उन्होंने प्रभावशाली रूप से परमेश्वर के वचन का अध्ययन किया और शिक्षा दी। अब हमारे पास सभी प्रकार की सुविधायें हैं परन्तु क्या हम इस संसार में कलीसिया के मुख्य उद्देश्य के प्रति आज्ञाकारी हैं।

6. परमेश्वर का वचन सीखना महान आज्ञा का एक अनिवार्य भाग है

पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के अंत में यीशु ने अपने शिष्यों यह कहते हुए महान आज्ञा दी, ''... स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर

सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ'' (मत्ती 28:18–20)। शिष्य वह व्यक्ति होता है जो यीश द्वारा सिखायी हुई बातों को सिखाने के योग्य होते हैं। इसलिये उचित रूप से वचचन सीखना शिष्य के लिये अनिवार्य है। केवल एक शिष्य ही दूसरों को यीशु का शिष्य बना सकता है। बहुत से लोग यीशु के पास भौतिक आवश्यकताओं के लिये आये परन्तु बाद में वे उसके पास से चले गये।। शिष्यों ने ही परमेश्वर के वचन के द्वारा संसार को रूपांतरित किया था।

7. परमेश्वर का वचन सीखना मसीह के समान स्वभाव के लिये अनिवार्य है

परमेश्वर का अंतिम लक्ष्य हमें यीशु मसीह की महिमा में रूपांतरित करना है। इसे समझने के लिये परमेश्वर ने हमें अपना वचन दिया है। पवित्रात्मा की भरपूरी और परमेश्वर का वचन हमारे चरित्र को बदल देगा। इस प्रक्रिया में हमें पवित्रात्मा की शक्ति से भरकर परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने की आवश्कता है। परमेश्वर का वचन यह सत्य इस रूप में प्रगट करता है कि ''इसलिए हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ : यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है'' (रोमियों 12:1–2)। यह हमें सांसारिक मानसिकता से दूर आत्मिक मानसिकता रखने में सहायता करेगा ताकि हम अधिकाधिक समीह समान स्वभाव दिखा सकें।

8. परमेश्वर का वचन सीखना परमेश्वर द्वारा स्वीकष्त होने हेतु तैयार होने के लिये आवश्यक है

प्रेरित पौलुस ने सेवा में अपने सहयोगी तीमुथियुस को इस प्रकार निर्देश दिया, ''अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो'' (2 तीमुथियुस 2:15)। और उसे यह कहकर प्रोत्साहित किया कि, ''जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएँ'' (1 तीमुथियुस 5:17)। ये पद स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि जब एक व्यक्ति लगातार परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता और जीवन में लागू करता है तो वह मान्यता पाता और दुगुने आदर का पात्र बनता/ती है। परमेश्वर के वचन का तिरस्कार आपके जीवन में असहमति और

शर्मिंदगी लायेगा।

9. परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना एक शिष्य के लिये अनिवार्य है

यीशु ने हमें शिष्य होने के लिये बुलाया है। उसने शिष्यत्व का जीवन लेने और उसके जीवन के सहभागिता रखने का विशेष निमंत्रण दिया है। यह सशरीर पीछे चलना मात्र नहीं है बल्कि उसके जीवन में सहभागी होना, उसके साथ यात्रा करना, उसके साथ जीना, उसके साथ खाना, उसके साथ रहना, और उससे वास्तविक जीवन के सारतत्व को सीखना है। जब तक हम यीशु के समान नहीं होते हैं तब तक यह एक समर्पण से पूर्ण प्रक्रिया है। (मत्ती 10:25)। इस प्रक्रिया में यीशु मसीह की संपूर्ण शिक्षा हमारे विचारों और मनोवष्त्ति में प्रवेश करता है। यह गलत मूल्यों को हमारे जीवन से दूर करने और परमेश्वर के राज्य के मूल्यों को अपनाने में हमारी सहायता करेगा।

10. परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना बुद्धि प्राप्त करने के लिये अनिवार्य है

परमेश्वर का वचन हमें परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त जीवन प्राप्त करने के लिए बुद्धि पाने हेतु प्रेरणा देता है। सच्ची बुद्धि हमें आदर प्रदान करेगा। यह शोभायमान भूषण और सुन्दर मुकुट के समान है (नीतिवचन 4:6–13)। परमेश्वर का भय मानना बुद्धि का आरंभ है। बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी परमेश्वर के वचन के अध्ययन को तुच्छ नहीं जानेगा (नीतिवचन 1:7)। ईश्वरीय बुद्धि ही है जो हमें परिपक्वता और ईश्वरीय स्वभाव की ओर ले चलता है। सांसारिक बुद्धि धोखा देने वाली है और यह हमारे वास्तविक स्वभाव को दूषित करता है। प्रेरित याकूब इसके विषय में इस प्रकार कहता है, ''तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। पर यदि तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना। यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है बरन सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। इसलिए कि जहाँ डाह और विरोध होता है, वहाँ बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है। पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है'' (याकूब 3:13–17)।

शेष अगले अंक में...

तीन सलाह

ए. जे. अब्राहम, बिलासपुर

लौदीकिया की कलीसिया को देखने पर प्रभु यीशु मसीह कुछ विश्लेषण की भाषा में बात करता है। वह कहता है, मैं तेरे कामों को जानता हूँ, कि तू न तो ठण्डा है न तो गरम.... (प्रकाशितवाक्य 3:15)। गुनगुनापन एक ऐसी अवस्था है जब मनुष्य जानकर भी अनजान बनता है...जागकर भी सोने का बहाना करता है। जो व्यक्ति जान बूझकर न जानने का बहाना करता है, उसे कौन ज्ञान दे सकता है? जो व्यक्ति नींद में होने का बहाना करता है, उसे कौन जगा सकता है?

यीशु कहता है, कि भला होता कि तू ठण्डा या गर्म होता (पद 15)। अर्थात इन दोनों अवस्थाओं में प्रभु काम कर सकता है। लेकिन जो व्यक्ति गुनगुना है उसके साथ प्रभु कोई व्यवहार नहीं कर सकता है। वह केवल उसे अपने मुँह से उगल ही सकता है। ऐसा व्यक्ति प्रभु को अपने जीवन में काम करने नहीं देता है। वह सोचता है कि उसे सब मालूम है और वह सही है। उसे किसी प्रकार की सुधार की आवश्यकता नहीं है। रूढ़िवादी विचारधारा व्यक्ति को अपने आप में संतृप्त रहना सिखाता है। ऐसा व्यक्ति जीवन को नहीं परन्तु जड़ता को मूल्यवान समझता है।

लौदीकिया की कलीसिया ने भी प्रभु की आवाज़ को सुनना बन्द कर दिया था। वे अपने आप में संतृप्त थे। उनके विचार से उनमें किसी प्रकार की कमी नहीं थी। उन्हें प्रभु की आवाज़ को सुनने की भी आवश्यकता नहीं थी। जो व्यक्ति अपने आप में किसी प्रकार की कमी नहीं देखता है, वह अपने आप में किसी प्रकार सुधार की गुंजाईश भी नहीं छोड़ता है।

हमारी अवस्था को जाननेवाला यीशु

परमेश्वर ने केवल हमारे बाह्य शरीर की रचना ही नहीं की है; बल्कि उसने हमारे मन और हृदय की भी रचना की है। हमारे मन और विचारों को परमेश्वर जानता है। वचन कहता है, कि मनुष्य शरीर ही है...और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है (उत्पत्ति 6:3, 5)।

लौदीकिया के लोग अपने आपको धनी कहते थे। वे कहते थे कि उन्हें किसी बात की घटी नहीं है। वे सांसारिक रूप से समृद्ध थे किन्तु उनकी समृद्धि बाह्य थी। परमेश्वर के लिये उनकी समृद्धि का कोई मूल्य नहीं था। परमेश्वर की नजर में वे अभागे, तुच्छ, कंगाल और नंगे थे। उनका भविष्य अन्धकारमय और उनका वर्तमान कंगालपन से भरा हुआ था। वे जितना अधिक अपने आपको ढ़ाँकने का प्रयास करते, उतना ही उनका नंगापन परमेश्वर के सामने प्रगट होता जाता था।

अदन के बगीचे में परमेश्वर के आने पर आदम और हव्वा ने अपने आपको छुपा लिया। इस भय से कि कहीं परमेश्वर उनकी नग्नता को न देख ले। परमेश्वर उनसे पूछता है, कि किसने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल मैंने तुझे खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या तू ने उसका फल खाया है? आदम की नग्नता उसके लिये शर्मिन्दगी का कारण बनता है। परमेश्वर का स्वरूप का आवरण हट जाने पर आदम अपने आपको लज्जाजनक स्थिति में पाता है।

लौदीकिया की कलीसिया के लोगों की दशा भी कुछ ऐसी ही है। परमेश्वर की नजर में वे अभागे और नंगे हैं। वे एक लज्जाजनक और अपमानजनक स्थिति में हैं। परमेश्वर की महिमा से जब हम अपनी तुलना करते हैं, तभी हम स्वयं की इस लज्जाजनक स्थिति को पहचान पाते हैं।

परमेश्वर की सलाह

परमेश्वर करुणामय है, वह लोगों से प्यार करता है। जब वह हमारी बीमारी को हमें बताता है, तो वह उसकी दवा भी बताता है। लौदीकिया की कलीसिया का मर्ज यीशु जानता था। वह उन्हें चार सलाहें देता है।

आग में ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले। पतरस अपनी पत्री में परखे हुये विश्वास को आग में ताये हुये सोने से भी अधिक मूल्यवान कहता है (1 पतरस 1:7)। परमेश्वर पर हमारा विश्वास किसी भी परिस्थिति से प्रभावित नहीं होना चाहिये। यह विश्वास परमेश्वर की पहचान प्राप्त करने से उत्पन्न होता है। परिस्थितिजन्य विश्वास परिस्थितियों के कारण ही टूट भी जाता है। यदि हमें मालूम है कि हमारा परमेश्वर कौन है, तो फिर कोई भी परिस्थिति हमें परमेश्वर से अलग नहीं कर सकती है। इसी परिप्रेक्ष्य में पौलुस कहता है, कि कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है (रोमियों 8:35)?

हम अपनी धार्मिकता को लेकर परमेश्वर के सामने नहीं जा सकते हैं। क्योंकि हमारी धार्मिकता परमेश्वर के सम्मुख मैले चिथडों के समान है। धार्मिक से धार्मिक व्यक्ति भी जब परमेश्वर के सामने जाता है तो मानो वह एक मैले कुचले कपड़े पहने हुये व्यक्ति के समान ही दिखता है (यशायाह 64:6)।

श्वेत वस्त्र पहिन ले। श्वेत वस्त्र परमेश्वर के उद्धार का प्रतीक है। मनुष्य को पाप के दलदल से निकालकर परमेश्वर अपनी धार्मिकता हमें इस प्रकार पहना देता है कि फिर जब भी हमें वह देखता है तब उसकी दृष्टि हमारे पाप पर नहीं बल्कि उसके द्वारा दी गई धार्मिकता होती है। अब परमेश्वर हमें एक पापी के रूप में नहीं परन्तु अपनी लेपालक संतान के रूप में देखता है जिसे उसने अपने पुत्र यीशु के लहू से खरीदा है। इस उद्धार के वस्त्र को पहने बिना कोई भी परमेश्वर के पास नहीं जा सकता है।

समय रहते हमें परमेश्वर प्रदत्त उद्धार के वस्त्र को पहन लेना है। वरना अपने आगमन पर प्रभु हमसे कहेगा कि वह हमें नहीं जानता है - भले ही हमने उसके नाम से कितने ही चिन्ह और चमत्कार किये हों। उसके सम्मुख हमें लज्जाजनक स्थिति से गुजरना पड़ेगा।

आँखों में लगाने के लिये सुर्मा ले ले। सुसमाचार की पुस्तकों में ऐसे कई वर्णन हैं जब यीशु दृष्टांतों में बात करने के पश्चात् अपने सुनने वालों से कहता है कि जिनके सुनने के कान हो वे देख लें...जिनकी आँखें हो वे देख लें। कई बार प्रभु को भी ऐसा लगता था कि लोग आँख होते हुए भी नहीं देखते हैं और कान होते हुए भी नहीं देखते हैं।

दाऊद परमेश्वर से निवेदन करता है कि मेरी आँखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूँ। क्या दाऊद अंधा था? निश्चय ही नहीं। फिर उसके कहने का तात्पर्य क्या था। वह इस सच्चाई को अच्छी तरह समझ गया था कि स्वर्गीय बातों को देखने के लिये उसे शारीरिक आँखों की नहीं परन्तु आत्मिक आँखों की आवश्यकता है।

यह आत्मिक दृष्टि हमें परमेश्वर ही देता है। इसलिये दाऊद परमेश्वर से आत्मिक दृष्टि देने की याचना करता है। हमें भी परमेश्वर से विनती करनी चाहिये कि वह हमारी आँखों को खोल दे। हम आत्मिक बातों को देख सकें।

बाइबल में की माताएँ - 4

शमूएल की माता, हन्ना

बाइबल में वर्णित कई श्रेष्ठ स्त्रियों के समान शमूएल की माता हन्ना का जीवन बहुत सी माताओं के लिए वर्तमान समय में प्रेरणादायक है। हन्ना बाँझ थी और वर्षों से वह इस पीड़ा और निन्दा को सह रही थी। प्राचीन समय में बड़ा परिवार परमेश्वर की आशीष माना जाता था, इसलिए बाँझ होना किसी भी स्त्री के लिए अपमान जनक और शर्मिन्दगी का कारण होता था। वह परमेश्वर द्वारा श्रापित मानी जाती थी। यह स्थिति और भी बुरी बन जाती थी जब पति की दूसरी पत्नी अथवा परिवार के अन्य स्त्रियाँ माँ बनती थी।

एक बार, शीलोह स्थित परमेश्वर के भवन में हन्ना प्रार्थना के दौरान अपनी इस गहरी पीड़ा को परमेश्वर के सम्मुख उण्डेल रही थी। उसका मुँह बन्द था किन्तु आँखें उसके दर्द को बयान कर रही थी। वह परमेश्वर से अपने हृदय में बातें कर रही थी। याजक एली ने उसे देख कर सोचा कि वह नशे में है। परन्तु हन्ना ने कहा कि वह प्रार्थना कर रही थी और परमेश्वर के सम्मुख अपनी निन्दा और पीड़ा बयाँ कर रही थी। उसके दुःख को जान कर एली ने उत्तर दिया, "कुशल से चली जा; इस्राएल का परमेश्वर तुझे मन चाहा वर दे" (1 शमूएल 1:17)। अपने पति एलकाना के साथ रामा स्थित अपने घर लौटने के बाद परमेश्वर ने उसकी सुधि ली और हन्ना गभवती हुई और समय पर उसके एक पुत्र हुआ, और उसका नाम शमूएल रखा, क्योंकि वह कहने लगी, मैं ने यहोवा से माँगकर इसे पाया है (1 शमूएल 1:19-20)।

परन्तु हन्ना ने परमेश्वर से प्रतिज्ञा किया था कि यदि वह उसे बेटा देगा तो परमेश्वर की सेवा के लिए उसे दे देगी। हन्ना अपने वचन पर बनी रही। उसने अपने नन्हे बालक को एली के हाथों में सौंप दिया। इस कारण परमेश्वर ने हन्ना को आशीष दिया और हन्ना ने शमूएल के बाद तीन पुत्रों और दो पुत्रियों को जन्म दिया। आगे चलकर शमूएल इस्राएल का अन्तिम न्यायी और प्रथम नबी बना, जो इस्राएल के प्रथम दो राजाओं शाऊल और दाऊद का परामर्शदाता भी बना।

हन्ना के कार्य :

हन्ना ने बहुत कुछ तो नहीं किया परन्तु उसने परमेश्वर की गई वाचा को पूरा किया। अपने पुत्र को परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

हन्ना की कमजोरियाँ :

हममें से बहुतों के समान हन्ना भी अपनी सँस्कृति से बहुत अधिक प्रभावित होने वाली स्त्री थी। दूसरे उसके विषय में क्या कहते थे इसी को उसने अपना व्यक्तित्व समझ लिया था।

हमारे लिए शिक्षा :

एक ही बात के लिए वर्षों तक प्रार्थना करने के पश्चात हममें से कई लोग हार मान लेते हैं। परन्तु हन्ना ने ऐसा नहीं किया। वह एक समर्पित और नम्र स्त्री थी। अन्ततः परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया। 1 थिस्सलुनीकियों 5:17 में पौलुस हमें निरन्तर प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है। हन्ना ने ठीक यही किया। हन्ना हमें कभी हार न मानने की शिक्षा देती है। क्योंकि ऐसा करने से हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वास जताते हैं। हन्ना के विषय में बाइबल में जो भी वर्णन है वह दो अध्यायों तक सीमित है किन्तु युगों के पश्चात भी उसका जीवन हमारे लिए प्रेरणादायक है।

प्रिय पाठक, हन्ना का जीवन आपके लिए भी प्रेरणादायक हो।

रचनायें आमन्त्रित हैं!

मसीही जीवन में उन्नति देने योग्य कहानियाँ, लेख, कवितायें आदि आमन्त्रित हैं। परमेश्वर ने यदि आपको लेखनी के क्षेत्र में वरदान दिया है तो उसका उपयोग करें और अपनी रचनायें स्पष्ट अक्षरों में लिख कर भेजें। योग्य रचनायें अगले अंकों में प्रकाशित की जाएँगी।

बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक-13

नोट : सभी प्रश्न यूहन्ना रचित सुसमाचार अध्याय 1-10 में से लिये गये हैं।

1. अच्छा चरवाहा कौन है? अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए क्या देता है?
2. वह कौन सा विषय है जो जगत के आरम्भ से कभी सुनने में नहीं आया है?
3. व्यक्ति किस प्रकार सत्य को जान सकता और स्वतन्त्र हो सकता है?
4. जो यीशु पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, उसके हृदय में से क्या निकलेंगी?
5. यीशु मसीह ने जो बातें हम से कही हैं, वे क्या हैं?
6. वह व्यक्ति कौन है जो मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है?
7. परमेश्वर किस प्रकार के आराधकों को ढूँढ़ता है?
8. मनुष्य पर दण्ड की आज्ञा का कारण क्या है?
9. कौन मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता है?
10. यीशु ने कहाँ पर अपना पहला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया?

नियम और शर्तें :

- पहेलियों के हल प्राप्त होने की अंतिम तिथि अगस्त 31 है।
- धर्मशास्त्र से मेल खानेवाले उत्तर ही मान्य होंगे। उत्तरों के साथ बाइबल संदर्भ देना अनिवार्य है।
- सभी प्रश्नों के सही हल भेजने वाले ही विजेता घोषित किये जाएंगे।
- कृपया अपना नाम और पता साफ-साफ अक्षरों में लिखें।
- सभी हल पोस्टकार्ड पर लिख कर पत्रिका के पते पर भेजें।

इस शब्द पहेली में बाइबल में वर्णित दस वृक्षों के नाम दिए गए हैं। उत्तर प्राप्त करने के

वो	उं	से	ल	प	स	ज	व
न	द	ब	म	ते	जं	द	ज
क	जी	म	बु	गू	ज	तं	ह
म	व	ने	च	ल	प	द	प
स	म	अं	जी	र	हं	प	द
प	द	ह	जू	व	जं	स	ब
ब	मे	ख	व	ह	दे	क	द
क	प	द	ह	जी	व	त	झा
जै	ज	म	ब	बा	दा	म	ऊ
न	तू	प	अ	म	रु	ज	अं
अ	पं	न	सं	इ	स	नू	ज

लिये न्यायियों 9:8; न्यायियों 4:5; न्यायियों 9:10; 1 शमूएल 22:6; 1 राजा 4:33; श्रेष्ठगीत 2:3; यशायाह 41:19; सभोपदेशक 12:5; यहेजकेल 17:5; और लूका 19:4 पढ़कर उन्हें बायें से दायें, ऊपर से नीचे और आड़ी दिशा में ढूंढ़िये।

मूसा

परमेश्वर अपने लोगों की अगुवाई करता है

इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के पश्चात फिरौन का मन बदल गया और उन्हें वापस लाने के लिए उसने अपनी सेना भेजी। इस्राएली एक ऐसे समुद्र के पास पहुँचे जो बहुत ही चौड़ा और गहरा था जिसे पार करना मुश्किल था!

परमेश्वर ने मूसा से अपनी लाठी समुद्र की ओर बढ़ाने के लिए कहा। जब मूसा ने ऐसा किया तो समुद्र दो भाग में बँट गया और इस्राएली पार उतर गए। परन्तु जब मिस्री सेना पार हो रही थी तब पानी पुनः पहले जैसा हो गया।

लोगों ने परमेश्वर की स्तुति की। मरुभूमि की यात्रा में परमेश्वर ने उनके लिए पानी और भोजन का प्रबन्ध किया। उसने दिन में बादल में होकर और रात में आग के खम्बे में होकर उनकी अगुवाई किया।

परमेश्वर ने अपने लोगों को आज्ञाएँ दी जिनका पालन उन्हें अपने जीवन में करना था। दो पत्थर की पटियाएँ लेकर परमेश्वर ने उस दस आज्ञाएँ लिखीं।

परमेश्वर ने उन्हें दिखाया कि किस प्रकार मिलापवाले तम्बू का निर्माण करें ताकि परमेश्वर का आदर हो और वे हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति, प्रेम, महिमा, और सामर्थ्य का अहसास करें।

जब मिलापवाला तम्बू बन चुका तब परमेश्वर ने उसे अपनी महिमा से भर दिया, जिसे सब लोगों ने देखा!

उपलब्ध पुस्तकें

10 से अधिक प्रतियों पर विशेष छूट!!

100/-	**70/-**	**50/-**	**40/-**

40/-	**25/-**	**मुफ्त**	**मुफ्त**

प्रतियाँ प्राप्त करने के लिये संपर्क करें -

Sanctuary Literature Service
P.B. N0. 27, Bilaspur, C.G- 495 001.
Cell Phone : +91 94255 49016